[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 1162 **L**

Unique Paper Code : 2102102401

Name of the Paper : Textual study of Indian Philosophy (NEP)

Name of the Course : **B.A. (Hons) DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt **Any Five** questions in all, selecting at least TWO questions from each text Nyayabindutika and Nyayamanjari).
3. **All** questions carry equal marks.
4. Answers may be written either in English or Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **किन्हीं पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक ग्रंथ (न्यायबिंदुटिका और न्यायमंजरी) से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करना।
3. **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।
4. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

1. What is the Significance of the study of Valid Cognition (*Samyagjñāna*)? Explain.
वैध अनुभूति (*सम्यग्ज्ञान*) के अध्ययन का क्या महत्त्व है? विश्लेषण कीजिए।

2. Explain "*Pratyakṣamkalpanāpoḍham*". Why did Dharmakīrti add "*Abhrāntam*" to the above definition of Dignāga?
"*प्रत्यक्षमकल्पनापोढम अभ्रान्तम*" की व्याख्या कीजिए। धर्मकीर्ति ने "*अभ्रांतम*" पद को दिङ्नाग के आधार पर क्यों समाहित किया? व्याख्या कीजिए।

P.T.O.

3. Describe different varieties of Direct Knowledge in view of *Nyāyabindutīkā*.

न्यायबिन्दु टीका के परिप्रेक्ष्य में प्रत्यक्ष ज्ञान के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए ।

4. What is the nature of object of perception in Dharmakīrti's philosophy? Explain in the context of *Nyāyabinduṭīkā*.

धर्मकीर्ति के दर्शन में प्रत्यक्ष के वस्तु का स्वरूप क्या है? *न्यायबिन्दु टीका* के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

5. Explain the definition of Inference "*Tat Pūrvakam Anumānam*" contained in the *Sūtra* in reference to *Nyāyamañjarī*?

न्यायमञ्जरी में अनुमान के सन्दर्भ में सूत्र में निहित "*तत् पूर्वकं अनुमानम्*" की परिभाषा स्पष्ट कीजिए ।

6. What is the exact import of the objections raised by the Cārvākas? Do they intend to invalidate inference per se, or do they find fault with the several definitions of inference offered by the different logicians of the Nyāyā school?

चार्वाकों द्वारा उठाई गई आपत्तियों का सटीक अर्थ क्या है? क्या उनका उद्देश्य *अनुमान* को अमान्य करने का है, या क्या वे न्याय दर्शन के विभिन्न तर्कशास्त्रियों द्वारा दी गई *अनुमान* की अनेक परिभाषाओं में गलती पाते हैं?

7. Explain Jayanta Bhatta's critique of the Buddhist view of the relation of Invariable Concomitance based upon the Laws of Identity and Causality.

जयंत भट्ट ने बौद्ध मत की व्याप्ति के संदर्भ में *तदातम्य* और *कार्य-कारण* के नियमों की किस प्रकार आलोचना की है? व्याख्या कीजिए।

8. Write Shorts Notes on any **TWO** of the following:
निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:

(a) *Kalpanā* (Construction) (*Nyāyabindutīkā*)
कल्पना (*न्यायबिन्दु टीका*)

(b) *Arthakriyākāritva* (*Nyāyabindutīkā*)
अर्थक्रियाकारित्व (*न्यायबिन्दु टीका*)

(c) Characteristics of reason or sign (*hetu*) (*Nyāyamañjarī*)
कारण या लिंग के लक्षण (हेतु) (*न्यायमञ्जरी*)

(d) *Śeṣavat* and *Samānyatodṛṣta* (*Nyāyamañjarī*)
शेषवत और *समन्यतोदृष्ट* (*न्यायमञ्जरी*)